Serial No. 1.

Notes

Date

हरिवंश राय बच्चन

भूमिका :- हालावाद के प्रवर्त्तक के रुप में हरिवंश राय बच्चन छायावादोतार काल के प्रतिष्ठित कवि हैं। आप मधुकाव्य का प्रणयन करने वाले ख्यातिप्राप्त कवि के रुप में जाने जाते हैं। अध्यापन के साथ-साथ आपने आकाशवाणी इलाहाबाद में हिन्दी सलाहकार के रुप में एंव विदेश मंत्रालय, भारत सरकार के हिन्दी विशेषज्ञ के रुप में भी महत्ती भूमिका निभाई।

जन्म एंव माता पिता :- हरिवंश राय बच्चन जी का जन्म 27 नवम्बर 1907 को बाबू प्रतापनारायण के घर हुआ। इनका जन्म इलाहाबाद के नजदीक प्रतापगढ़ जिले के एक छोटे-से गाँव पट्टी में एक साधारण मध्यवर्गीय कायस्थ परिवार में हुआ था। यह प्रताप नारायण श्रीवास्तव और सरस्वती देवी के बडे पुत्र थे। हरिवंश राय बच्चन जी के पूर्वज मूलरुप अमोढा (उत्तर प्रदेश) के निवासी थे। यह एक कायस्थ

परिवार था। कुछ कायस्थ परिवार इस स्थान को छोड कर प्रयाग जा बसे थे। इनको बाल्यकाल में बच्चन कहा जाता था। यह घर के बडे पुत्र थे तथा इनके छोटे भाई भी थे जिनका नाम प्रमोद बच्चन था।

बचपन :- हरिवंश राय बच्चन जी का जन्म आर्थिक रुप से सम्पन परिवार में हुआ था। आपकी माता जी आपको बचपन में प्यार से 'बच्चन' कहकर पुकारती थीं। माँ की ममता की स्मृति बनाए रखने के लिए आपने उपनाम 'बच्चन' ही रख लिया और अब भी इसी नाम से प्रसिद्ध हैं।

शिक्षा :- बच्चन जी बचपन से ही एक मेधावी छात्र रहे। बच्चन जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा उत्तर प्रदेश राज्य के इलाहाबाद शहर से पूर्ण की थी। आपने स्कूली पढाई बॉयज हाई स्कूल एवं कालेज इलाहाबाद से ही पूर्ण की थी। पढाई में बच्चन जी बहुत अच्छे थे और उन्हे

अपनी पढ़ाई को पूरा करने के लिए स्कॉलरशिप भी दी गई थी।

साहित्य प्रेरणा :- जब आप अपनी शिक्षा पुरी करने के बाद भारत लौटे तो आपने एक साल तक प्रोडयूसर के पद पर कार्य किया। हिन्दी जगत को बच्चन जी का सर्वप्रथम परिचय फारसी के प्रसिद्ध कवि उमर खैय्याम की रुबाइयों के अनुवाद से हुआ। परंतु यह अनुवाद भी मूल रचना के मादक माधुर्य से पूर्णतया अलग था। बच्चन जी ने शाब्दिक अनुवाद की अपेक्षा खैय्याम की भावना को अपना कवि हृदय के रस से और भी मर्मस्पर्शी बना दिया था।

कार्यक्षेत्र :- अंग्रेजी विषय में एम. ए. परीक्षा उत्तीर्ण करने पर आप इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में अंग्रेजी के प्राध्यापक नियुक्त हुए। अंग्रेजी के अध्यापक होते हुए भी हिन्दी के प्रति भी आपके मन में विशेष आकर्षण था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में 1941 से

1952 तक अध्यापन कार्य किया। पुनः 1954 ई. में आपने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। कुछ वर्ष बाद आपने कैंब्रिज यूनिवर्सिटी से डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद आपकी नियुक्ति आकाशवाणी मे हुई। सन 1955 ई. मे आपको भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में हिंदी विशेषज्ञ के रूप में नियुक्त किया गया। सन 1966 ई. में आप राज्यसभा के सदस्य मनोनीत हुए।

<u>वैवाहिक जीवन</u>:- हरिवंश राय बच्चन जी की पहली शादी 1926 में 19 वर्ष की उम्र में "श्यामा बच्चन" जी से हुई जो उस समय 14 वर्ष की थीं। 1936 में टीबी के कारण श्यामा की मृत्यु हो गई। पाँच साल बाद 1941 में बच्चन ने एक पंजाबन तेजी सूरी से विवाह किया जो रंगमंच तथा गायन से जुड़ी हुई थीं। हरिवंश राय बच्चन जी की दूसरी पत्नी "तेजी बच्चन" था। जिनसे उन्होंने 1941 में शादी की।

जिनसे दो संताने हुई। इन दोनों में एक बॉलीवुड सुपर स्टार अमिताभ बच्चन हैं और दूसरे पुत्र अजिताभ जो एक बिजनेस मैन बने।

पुरस्कार एवं सम्मान :- हरिवंश राय बच्चन जी के पुरस्कार एवं सम्मान कुछ इस प्रकार हैं:-

- साहित्य अकादमी पुरस्कार (1938) : उनकी कविता "दो चट्टाने" के लिए।
- सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार (1938)।
- कमल पुरस्कार (1938) : एफ्रो एशियाई सम्मेलन के कमल पुरस्कार से भी सम्मानित।
- सरस्वती सम्मान : बिडला फाउण्डेशन ने उनकी आत्मकथा के लिए उन्हे सरस्वती सम्मान दिया था।
- पद्म भूषण : बच्चन को भारत सरकार द्वारा 1976 में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।
- भारत सरकार ने 2000 ई. उनके सम्मान में 5 रुपये के

Serial No. 6.

Notes

Date

मूल्य का डाक टिकट भी जारी किया।

निधन :- हरिवंश राय बच्चन जी का 18 जनवरी 2003 में 95 वर्ष की आयु में मुंबई के एक अस्पताल में सांस की बीमारी की बजह से निधन हो गया। परंतु इनके निधन के बावजूद ये अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों के दिलों में आज भी जिंदा हैं।

रचनाएँ

हरिवंश राय बच्चन जी की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

(i) काव्य संग्रह ⇒ मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, एकांत संगीत।

(ii) आत्मकथा ⇒ 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ, दशद्वार से सोपान।

(iii) अनुवाद साहित्य ⇒ हैमलेट, जनगीता, मैकवेथ

काव्यगत विशेषताएँ

हरिवंश राय बच्चन जी की काव्यगत विशेषताएँ निम्नलिखित अनुसार है –

हालावाद => बच्चन जी हिन्दी में हालावाद के एकमात्र कवि थे। उमर ख्याम की रुबाइयों का अनुवाद 'मधुशाला' के रुप में करके आपने 'खाओ, पीओ, मौज उडाओ' का स्वर उपस्थित किया। हाला, मधुबाला और मधुशाला के ताने बाने से बनी हुई बच्चन जी की ये रचनाएँ बहुत ही लोकप्रिय हुई।

राष्ट्रीय भावना :- कोई भी जागरुक साहित्यकार युग की चेतना से अछूता नही रह सकता। तब देश में व्यापक राष्ट्रीय भावनाओं की ओर भी कवि का मन प्रवृत हुआ। इस क्षेत्र में बच्चन जी की भावनाएँ गाँधीवाद से प्रभावित हुई। 'सूत की माला' और 'खादी के फूल' में बच्चन जी की राष्ट्रीय भावनाएँ देखी जा सकती है।

महात्मा गाँधी की हत्या पर लिखी गई 'खादी के फूल' शीर्षक कविता की निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए –

उस महाशोक में भी मन को अभिमान हुआ,
धरती के ऊपर कुछ ऐसा बलिदान हुआ,
प्रतिफलित हुआ धरणि के तब से कुछ ऐसा
जिसका अमरों के आंगन में सम्मान हुआ।

<u>गीतिमयता</u> ⇒ यह बच्चन जी के काव्य की बहुत बड़ी विशेषता है। गीतिकाव्य के सभी लक्षण- संक्षिप्तता, भावात्मकता, सरसता आदि - इनके गीतों में उपलब्ध होते हैं। सरल और व्यावहारिक भाषा में आत्माभिव्यक्ति करने में आप सिद्धहस्त हैं। 'मधुबाला' में हमें ऐसे ही गीत देखने को मिलते हैं।

तुम देकर मदिरा के प्याले
मेरा मन बहला देती हो
उस पार मुझे बहलाने का
उपचार न जाने क्या होगा।
इस पार, प्रिय, मधु है, तुम हो,
उस पार न जाने क्या होगा।

आशावाद :- बच्चन जी की पहली पत्नी श्यामा जी मृत्यु होने पर इन्होंने बड़ा शोक मनाया। आपने लिखा-

जीवन में एक सितारा था, माना वह बेहद प्यारा था,
जो टूट गया सो टूट गया, अंबर की छाती को देखो,
कितने इसके तारे टूटे, कितने इसके प्यारे छूटे,
बोलो टूटे तारों पर कब अंबर शोक मनाता है।

उन्हीं बच्चन के जीवन में जब दूसरी पत्नी तेज़ी जी आई तो उन्हें लगा कि पतझड़ के बाद बहार आ गई है। उनकी विचारधारा आशावादी हो गई-

'जो उजड़ते हैं प्राकृति के जड़ नियम से
उजडते हुए को बसाना कब मना है
है अंधेरी रात पर दीवा जलाना कब मना है'

प्रगतिवाद :- जीवन के आरंभ में बच्चन जी हालावादी थे। श्यामा जी की मृत्यु से निराशावादी बन गए। तेज़ी जी के आगमन पर आशावादी हो गये। समाज के और अधिक निकट आने पर प्रगतिवाद

बन गए। देश की भूखी-नंगी जनता को देखकर उनका कवि मन कह उठता है-

भूख जब धरा पर चलती है
वह जगमग हिलती है
वह अन्याय को चबा जाती है
अन्याय को खा जाती है।

भाषा शैली :- बच्चन जी भौतिकता के कवि थे। वे कल्पना के आकाश में नहीं, यथार्थ की धरती पर विचरे हैं। बच्चन जी की कला अलंकार रहित है। उनकी भाषा सहज और भावभीनी है। यह भाषा साहित्य की गरिमा से पूर्ण होते हुए भी बोलचाल के निकट है। बच्चन जी की प्रतिभा मूलतः गीतात्मक है। सुमित्रानंदन पंत ने बच्चन जी की शैली के संबंध में कहा था- 'वे मानव हृदय मर्मज्ञ, रसिक गायक, भाव के धन कवि, एक युग प्रबुद्ध संदेशवाहक थे।'

निष्कर्ष :- हरिवंश राय बच्चन जी हिन्दी के बहुत ही अच्छे आधुनिक काल के कवि थे। जिन्होंने हिन्दी को महत्वपूर्ण बनाने में अपना बहुत योगदान दिया है।